05 / 12 / 79 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

रियलाइजेशन द्वारा

विजय का झण्डा लहराने का अनुभव

➢➢ मैं आत्मा बाबा से सर्व सम्बन्धों की अनुभूति कर रही हूँ

➳ _ ➳ मीठे बाबा मात-पिता बनकर

→ अमृतवेले रोज की तरह

→ लाडले बच्चे जागो कह

→ मुझे प्यार से जगा रहे हैं

→ अपनी गोदी में बिठाकर

■ लाड-दुलार कर रहे हैं

■ अपने प्यार से सराबोर कर रहे हैं

→ बाबा की गोदी के झूले में बैठकर

■ अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति कर रही हूँ

■ उनके स्नेह में समा रही हूँ

→ बाबा के साथ रूहानी सैर करते हुए

■ रूहानियत से भरपूर हो रही हूँ

➳ _ ➳ प्यारे बाबा शिक्षक बनकर

→ रोज ज्ञानामृत पिला रहे हैं

→ राजयोग की शिक्षा दे रहे हैं

→ ऐसे रूहानी शिक्षक से पढाई पढ़कर

■ मैं नर से नारायण बन रही हूँ

■ विश्व का मालिक बन रही हूँ

➳ _ ➳ प्यारे बाबा सतगुरु रूप में

→ मनमनाभव का मन्त्र देकर

■ मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा दे रहे हैं

➳ _ ➳ बाबा मेरी सखा, बंधू बनकर

→ मेरे साथ खेल रहे हैं

→ मेरा मनोरंजन कर रहे हैं

→ हर कार्य में मेरे साथ रहकर

■ मुझे रास्ता दिखा रहे हैं

■ सही राय दे रहे हैं

➳ _ ➳ सदा साजन के रूप में

→ हर पल साथ निभा रहे हैं

→ सदा सुहागन का

■ वरदान दे रहे हैं

→ मैं सजनी अपने दिल का हर राज

■ अपने साजन को बयां कर रही हूँ

→ सदा साजन की यादों में खोई रहती हूँ

→ सदा साजन के अंग संग रह

■ उनके रंग में रंग रही हूँ

➳ _ ➳ सर्व सम्बन्धों की अनुभूति में मग्न रह

→ पुरानी दुनिया के वातावरण से

■ सहज ही उपराम हो रही हूँ

➳ _ ➳ भिन्न-भिन्न सम्बन्ध का अनुभव कर

→ बाबा का सहयोग पा रही हूँ

■ और निरंतर योगी बन रही हूँ

➢➢ मैं सर्व अनुभवी मूर्त आत्मा हूँ

➳ _ ➳ ज्ञान के सब्जेक्ट में

→ ज्ञान के एक-एक प्वाइंट की

→ अनुभूति कर रही हूँ

→ हर प्वाइंट की गहराई में जाकर

■ ज्ञान मोतियों को चुग रही हूँ

→ मनन द्वारा स्वरूप में ला रही हूँ

■ ज्ञान की अथॉरिटी बन रही हूँ

➳ _ ➳ धारणा की सब्जेक्ट में

→ एक-एक गुण की धारणा कर

■ हर गुण के अनुभव की

■ अथॉरिटी बन रही हूँ

➳ _ ➳ स्वदर्शन चक्रधारी बन

→ स्व के दर्शन का

■ अनुभव कर रही हूँ

➳ _ ➳ सेवा की सब्जेक्ट में

→ आलराउन्डर और एवररेडी बन रही हूँ

➢➢ रियलाइजेशन द्वारा विजय का झंडा लहरा रही हूँ

➳ _ ➳ मैं मास्टर ऑलमाइटी अथॉरिटी

→ सर्व अनुभवों की खान हूँ

→ हर शब्द के अनुभव की अथॉरिटी हूँ

→ सर्व प्राप्ति स्वरुप हूँ

➳ _ ➳ मैं बापदादा के रूहानी सेना की

→ महारथी हूँ

→ मेरे मस्तक पर सदा

- खुशी की झलक से
- निश्चय की फलक से
- विजय का झंडा लहरा रहा है

→ प्रत्यक्षता के विजय पुष्पों की

- वर्षा हो रही है